एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भारत एवम् गुजरात के मत्स्योद्योग की रूपरेखा

(*ध्रुति पी. कोटाडिया एवं रितेश वी. बोरीचांगर)
मत्स्य विस्तार, अर्थशास्त्र और सांख्यिकी विभाग,
मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, कामधेनु विश्वविद्यालय, नवसारी
*संवादी लेखक का ईमेल पता: dhrutikotadiya99@gmail.com

भारत विश्व के सबसे बड़े मछली उत्पादक देशों में से एक है और वैश्विक उत्पादन में इसका हिस्सा 7.58% है। दुनिया की 10% मत्स्य जैविक विविधता के साथ भारत मत्स्य उत्पादन क्षेत्र में दुनिया में तीसरे स्थान पर और जलीय कृषि में दूसरे स्थान पर है। भारत के सकल मूल्य वर्धित (GVA) में 1.24% और कृषि GVA में 7.28% (2018-19) का योगदान देने वाला मत्स्य उद्योग और जलीय कृषि लाखों लोगों के लिए भोजन, पोषण, आय और आजीविका का महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है। हाल के वर्षों में लगभग 10% की प्रभावशाली औसत वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की गई है।

भारत के पास 2.02 मिलियन वर्ग किमी का एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक ज़ोन (EEZ) और 0.53 मिलियन वर्ग किमी का महाद्वीपीय शेल्फ क्षेत्र है। इसके अलावा, भारत की नदियाँ और नहरें (1.95 लाख किमी), बाढ़ के मैदान (8.12 लाख हेक्टेयर), तालाब और टैंक (24.1 लाख हेक्टेयर), जलाशय (31.5 लाख हेक्टेयर), खारे पानी के क्षेत्र (12.4 लाख हेक्टेयर), और खारे/क्षारीय प्रभावित क्षेत्र (12 लाख हेक्टेयर) आदि के रूप में विभिन्न अंतर्देशीय मत्स्य पालन के संभावित संसाधन भी प्रदान किए गए हैं। इन संसाधनों का उचित और सतत उपयोग करके, भारत मत्स्य उत्पादन में और भी अधिक वृद्धि कर सकता है, जिससे देश की खाद्य सुरक्षा, रोजगार, और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

आजादी के बाद भारत का मत्स्य उत्पादन 22 गुना बढ़ा है, यानी वर्ष 1950-51 में 7.5 लाख टन से बढ़कर वर्ष 2021-22 में कुल मत्स्य उत्पादन 162.5 लाख मीट्रिक टन हो गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 10.3% वृद्धि दर दर्शाता है। यह कुल घरेलू उत्पादन (GDP) का 1.2% से अधिक और कृषि GDP का 6.8% हिस्सा है। भारत में समुद्री मत्स्य उत्पादन की तुलना में अंतर्देशीय उत्पादन में वृद्धि हुई है। विशेष रूप से, मत्स्यपालन 8% से अधिक वार्षिक दर से बढ़ रहा है। विश्व के कुल मछली व्यापार में भारत की हिस्सेदारी लगभग 4% है। भारत दुनिया के शीर्ष पांच मछली निर्यातक देशों में शामिल है और 123 देशों में समुद्री उत्पादों का निर्यात करता है। वर्ष 2022-23 के दौरान, हमारे देश ने लगभग 63,969 करोड़ रुपये की वार्षिक विदेशी मुद्रा मछली निर्यात (17 लाख टन) के माध्यम से अर्जित की। मत्स्य उद्योग और मत्स्य पालन लाखों लोगों के लिए, खासकर ग्रामीण आबादी के लिए, भोजन, पोषण, रोजगार और आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। वास्तव में, यह क्षेत्र प्रारंभिक स्तर पर लगभग 25 मिलियन मछुआरों और उनके परिवारों को आजीविका प्रदान करता है और मत्स्य मूल्य श्रृंखला में इससे दोगुनी संख्या में लोग

शामिल हैं। मछली प्रोटीन का एक सस्ता और समृद्ध स्रोत है और पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए सबसे स्वास्थ्यवर्धक विकल्पों में से एक है। इसमें आय बढ़ाने और हितधारकों को आर्थिक समृद्धि लाने की अपार संभावनाएं हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि टिकाऊ, जिम्मेदार और न्यायसंगत तरीके से इसके विकास को प्रोत्साहित करने के लिए नीति और वित्तीय सहायता के माध्यम से मत्स्य उद्योग पर निरंतर और केंद्रित ध्यान दिया जाए।

यदि हम गुजरात की बात करें, तो गुजरात में मीठे पानी के मत्स्य पालन के लिए व्यापक संभावनाएं हैं। मछली एक जलीय प्राणी है, इसलिए जब हम गुजरात में मीठे पानी के जलस्रोतों की बात करते हैं, तो लगभग 22,000 हेक्टेयर गाँव तालाब, 93,000 हेक्टेयर छोटे जलाशय, 2.55 लाख हेक्टेयर मध्यम और बड़े जलाशय हैं। 855 किमी क्षेत्र में नदियाँ और नहरें फैली हुई हैं, और 21,000 हेक्टेयर जल क्षेत्र में खाड़ियाँ हैं। इन मीठे पानी के जल संसाधनों के अलावा, गुजरात की महत्वाकांक्षी सरदार सरोवर परियोजना के तहत 34,867 हेक्टेयर जलाशय क्षेत्र, 10,500 हेक्टेयर में कमांड पॉन्ड क्षेत्र, 5000 हेक्टेयर जलभराव क्षेत्र और 500 हेक्टेयर में नर्मदा खाड़ी के जलाशय शामिल हैं। गुजरात में इतने अधिक जल संसाधन होने के बावजूद, गुजरात का अंतर्देशीय मत्स्य उत्पादन 10% से भी कम है, यानी लगभग 1.87 लाख मीट्रिक टन के आसपास है। दक्षिण गुजरात और मध्य गुजरात के अधिकांश जिलों में सिंचाई सुविधाएं, जैसे जलाशय, नहरें, नाले और बारहमासी गाँव तालाब उपलब्ध हैं। इसलिए इस क्षेत्र में मीठे पानी के मत्स्य पालन की उज्ज्वल संभावनाएं हैं।

गुजरात में मीठे पानी के मत्स्य उत्पादन में भरूच जिला अग्रणी है। इसके बाद सूरत, नवसारी, तापी, वलसाड, कच्छ, और नर्मदा का स्थान आता है। वर्तमान समय में गाँव तालाबों में मत्स्य पालन से प्रति हेक्टेयर 700 से 1000 किलोग्राम प्रति वर्ष मत्स्य उत्पादन होता है। हालांकि, यदि मत्स्य किसान वैज्ञानिक तरीकों को अपनाएं, तो राज्य का अंतर्देशीय मत्स्य उत्पादन काफी बढ़ सकता है। वैज्ञानिक तरीके जैसे बेहतर मछली बीज का चयन, तालाबों का उचित प्रबंधन, उचित आहार और जल गुणवत्ता की निगरानी, इन सभी उपायों से उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है, जिससे मत्स्य पालन से होने वाली आय में भी वृद्धि होगी।

गुजरात में समुद्री तट या नदी के निकट रहने वाले लोग सामान्यतः मछली पकड़ने या मछली पकड़ने से संबंधित अन्य व्यवसायों में लगे होते हैं। मछली पकड़ने के व्यवसाय को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: वास्तविक मछली पकड़ना 73.04%, मार्केटिंग 16.62%, जाल की बिक्री और मरम्मत 9.93%, हैचरी 0.22%, सजावटी मछली पालन 0.05%, और अन्य विविध 0.09%। गुजरात में 5,58,691 सक्रिय मछुआरे हैं, जिनमें 51.68% पुरुष और 48.32% महिलाएं शामिल हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, राज्य में 232 जिला सहकारी संस्थाएं सक्रिय हैं। गुजरात परंपरागत रूप से एक शाकाहारी राज्य है, फिर भी यह भारत के प्रमुख मछली उत्पादक राज्यों में से एक है।

सारांश

भारत और गुजरात के जल संसाधनों को देखते हुए, दोनों के लिए मत्स्य पालन के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। भारत विश्व में तीसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक देश है, और इसमें अंतर्देशीय तथा समुद्री दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई है। यह उद्योग लाखों लोगों को रोजगार और पोषक आहार प्रदान करता है, साथ ही आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। गुजरात में भी खारे पानी के जल संसाधनों का उपयोग करके अंतर्देशीय मत्स्य उत्पादन बढ़ाने के उज्ज्वल अवसर हैं। भाखड़ापानी के झींगा

पालन के लिए लगभग 89,000 हेक्टेयर संभावित क्षेत्र उपलब्ध है, लेकिन इसमें से केवल 10,000 हेक्टेयर क्षेत्र में ही झींगा पालन किया जा रहा है। यदि 50,000 हेक्टेयर क्षेत्र भी मछुआरों या मत्स्य किसानों को झींगा पालन के लिए आवंटित किया जाए, तो गुजरात का झींगा उत्पादन और विदेशी मुद्रा आय में भारी वृद्धि हो सकती है, जिससे राज्य के आर्थिक विकास में भी बढ़ोतरी हो सकती है। इसलिए, इस उद्योग को सतत और वैज्ञानिक तरीकों से आगे बढ़ाने का प्रयास आवश्यक है।